प्रगति-2

2016-2017

हिंदी

कक्षा VII

NOT FOR SALE

स्वाध्यायान्मा प्रमदः
राज्य शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण परिषद्

SPONSORED BY :
DELHI BUREAU OF TEXT BOOKS

शिक्षा निदेशालय
रा.रा.क्षे., दिल्ली सरकार

प्रगति–2

2016-2017

हिंदी

कक्षा VII

NOT FOR SALE

SCERT
स्वाध्यायान्मा प्रमदः
राज्य शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण परिषद्

SPONSORED BY :
DELHI BUREAU OF TEXT BOOKS

GNCT OF DELHI
शिक्षा निदेशालय
रा.रा.क्षे., दिल्ली सरकार

पुनर्वीक्षण :

डॉ. शारदा कुमारी
सुश्री लक्ष्मी पाण्डेय
मंडल शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, आर.के.पुरम, नई दिल्ली

परावर्द्धन एवं संपादन समूह :

- डॉ. जयशंकर शुक्ला, मैंटर शिक्षक,
  राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, राजनिवास मार्ग, दिल्ली
- श्री आलोक तिवारी, मैंटर शिक्षक
  राजकीय बाल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शाहबाद दौलतपुर, दिल्ली
- श्री संजीव शर्मा, मैंटर शिक्षक
  राजकीय प्रतिभा विकास विद्यालय, किशनगंज, दिल्ली
- श्री अक्षय कुमार दीक्षित,
  राजकीय सर्वोदय बाल विद्यालय, फतेहपुर बेरी, नई दिल्ली
- श्रीमती वीना शर्मा
  राजकीय सर्वोदय कन्या विद्यालय, निलोठी, नई दिल्ली

प्रकाशन प्रभारी : सपना यादव

प्रकाशन दल : श्री नवीन कुमार, सुश्री राधा और श्री जय भगवान

भूमिका

दिल्ली सरकार ने बच्चों की शिक्षा के संदर्भ में एक बहुत ही महत्वपूर्ण निर्णय लिया कि सभी अध्यापक छोटे-छोटे समूहों में बैठकर छठी, सातवीं एवं आठवीं कक्षा के बच्चों की पुस्तकों का बारीकी से अवलोकन एवं अध्ययन करें और इन कक्षाओं के लिए निर्धारित पाठ्यपुस्तकों में दी गई रचनाओं एवं विषयों को आधार बनाकर सीखने-सिखाने के लिए पूरक सामग्री की रचना करें। इस समूचे अभ्यास का उद्देश्य यह था कि सभी अध्यापकों को एक ऐसा साझा धरातल मिले जहाँ वे बच्चों के मौजूदा अधिगम स्तर की समझ के आधार पर अपनी कक्षाओं के बच्चों के लिए अध्ययन अध्यापन की सामग्री मिल-जुलकर तैयार कर सकें।

दूसरे शब्दों में, कह सकते हैं कि बच्चों के लिए सरल एवं संदर्भ युक्त पठन सामग्री तैयार करने का यह एक महत्त्वपूर्ण प्रयास था। इस महती उद्देश्य को पूरा करने के लिए राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा शिक्षा निदेशालय के हिन्दी, अंग्रेजी, गणित, सामाजिक अध्ययन एवं विज्ञान के लगभग 20,000 अध्यापकों के लिए मई एवं जून 2016 में कार्यशालाएँ आयोजित की गई। इन कार्यशालाओं के सत्रों का संचालन सर्व शिक्षा अभियान के संकुल संसाधन समन्वयकों के सहयोग से मैंटर शिक्षकों द्वारा किया गया।

इन कार्यशालाओं में अध्यापकों ने विषयवस्तु के साथ-साथ कक्षा शिक्षण में प्रयुक्त तौर-तरीकों पर भी खुलकर चर्चा की। इस प्रकार हिन्दी विषय का अध्यापन कर रहे लगभग 4000 अध्यापकों (टी.जी.टी हिन्दी) ने अपने विषय के लिए पूरक अधिगम सामग्री तैयार की। इसके बाद मैंटर शिक्षकों के एक समूह ने कार्यशालाओं में तैयार इस सामग्री का संपादन किया और मंडल शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थानों के विषय विशेषज्ञों द्वारा इस संपादित सामग्री का पुनर्वीक्षण किया गया। इस समूची प्रक्रिया में निर्धारित पाठ्य पुस्तकों की विषय वस्तु को आधार बनाते हुए पूरक अधिगम सामग्री तैयार की गई।

इस प्रक्रिया एवं सामग्री को 'कार्य में प्रगति' के रूप में देखा जाना चाहिए। यह सामग्री निर्धारित पाठ्य पुस्तकों का विकल्प नहीं है, बल्कि यह सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को आधार देने और उसका संवर्द्धन करने के लिए अतिरिक्त सामग्री है। हम अध्यापकों एवं अध्यापक शिक्षकों से अपेक्षा करते हैं कि बच्चों के साथ इस सामग्री के निर्वाह एवं अन्त:क्रिया से उपजे अनुभवों को हमारे साथ साझा करें, साथ ही इस प्रकार के प्रयासों में सुधार एवं संवर्द्धन के लिए अपने सुझाव भी हमें दें। आप अपने सुझाव एवं फीडबैक राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के होमपेज पर उपलब्ध फीडबैक प्रपत्र के ज़रिए ऑन लाइन भी भेज सकते हैं।

संवाद........अपने अध्यापक साथियों से

साथियों, आप सभी जानते हैं कि बच्चे औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने से पहले ही भाषा की जटिलताओं और नियमों को आत्मसात् कर पूर्ण भाषिक क्षमता के साथ विद्यालय की देहरी के भीतर प्रवेश करते हैं। जो बच्चे बोल नहीं पाते वे भी अपनी अभिव्यक्ति के लिए उतने ही जटिल वैकल्पिक संकेतों और प्रतीकों का विकास कर लेते हैं। आपने सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान बच्चों की इस सहजात भाषिक क्षमता का पूरा ध्यान रखते हुए और परिवार तथा आस-पास के लोगों के साथ अंत: क्रिया से उपजे अनुभवों का समुचित उपयोग करते हुए उन्हें पढ़ने और लिखने की रोमांचक दुनिया में प्रवेश करवाया है। आप इस बात की भरपूर समझ रखते हैं कि आप के पास आने वाले बच्चे भिन्न-भिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक आर्थिक पृष्ठभूमि के हैं, उनके पास दुनिया को अपनी ही तरह से देखने के अपने तरीके हैं। वे बड़े सहज भाव से अपनी बात, अपने अनुभव, भावनाएँ, इच्छाएँ व्यक्त कर देते हैं।

आपने पढ़ना-लिखना सीखने के अवसर देते समय इस सहजता को ध्यान में रखा है। अब आपका समूचा ध्यान इस बात पर है कि आपके विद्यार्थी जिस सहजता के साथ पढ़ने लिखने की दुनिया में प्रवेश कर गए हैं, उसी सहजता के साथ वे इन भाषायी कौशलों में निपुणता भी हासिल करें। इस महती कार्य में आपका साथ देने के लिए प्रगति-2 आपके पास है जिसका अन्तत: उद्देश्य है बच्चों को उत्साही पाठक बनने के लिए प्रोत्साहित करना और उनमें परिवेशीय सजगता का भाव बनाए रखना।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली द्वारा कक्षा छह, सात एवं आठ के लिए तैयार हिन्दी की पाठ्य पुस्तकों 'वसंत' की रचनाओं को आधार बनाते हुए 'प्रगति' विद्यार्थियों के लिए भाषायी गतिविधियों का एक विस्तृत फ़लक प्रस्तुत करती है। विद्यार्थी रचनाओं का रसास्वादन अपनी मूल पुस्तक 'वसंत' से करेंगे और उन रचनाओं के पठन से उपजी अनुभूतियों को अपने अनुभवों से जोड़ने व कल्पना की ऊँची उड़ान भरने के लिए 'प्रगति' की गतिविधियों का आनन्द उठाएँगे। सरस और सरल गतिविधियों का यह व्यापक संसार विविधता का एक सुंदर ताना-बाना प्रस्तुत करता है जो विद्यार्थियों को न केवल भाषायी कौशलों में निपुणता प्राप्त करने में मदद करेगा बल्कि उन्हें बुनियादी मूल्य संरचना और भविष्य के प्रति दृष्टि निर्माण की राह पहचानने में भी योगदान देगा।

यह 'वसंत' की रचनाओं का प्रवेश द्वार है साथ ही भाषायी कौशलों में समृद्धता प्राप्त करने का सरस रास्ता भी।

'प्रगति' के साथ अन्त:क्रिया करते समय अगर किसी पल विशेष में आपको ऐसा लगे कि अभ्यास कार्य की बहुलता है तो घबराएँ नहीं, अभ्यास कार्य की अनिवार्यता अर्जित किए गए कौशलों के संवर्द्धन के लिए है न कि उन्हें निरूत्साहित करने के लिए। यहाँ पर समय प्रबंधन से जुड़े आपके कौशल बहुत महत्वपूर्ण हैं। किसी रचना संदर्भ के विशेष में आपको यह महसूस होगा कि उसके लिए दी गई गतिविधियाँ रचना के पठन कौशल का आकलन नहीं कर रही तो ऐसा इसलिए किया गया है कि आप उस पाठ विशेष को पढ़ाने के बाद विद्यार्थियों से ही प्रश्न बनवाएँ। प्रश्नों की प्रकृति ऐसी हो जो कल्पनाशीलता, अनुमान लगाने की क्षमता, वर्गीकरण, विश्लेषण, विवरण आदि प्रस्तुत करने की क्षमता का विकास करते हो। यदि विद्यार्थी ऐसे प्रश्न बना पाते हैं तो समझिए कि वे पाठ के मर्म को पूरी तरह से समझ रहे हैं। बच्चों के प्रति आपके सरोकार एवं आपकी रचनात्मकता इस सामग्री का भरपूर लाभ उठाएगी। आपके सुझावों की भी अपेक्षा सदैव रहेगी।

विषय सूची

क्रम संख्या	अध्याय	वर्ग	पृष्ठ संख्या
1.	रक्त और हमारा शरीर	निबंध	1
2.	पापा खो गए	नाटक	6
3.	शाम – एक किसान	कविता	11
4.	चिड़िया की बच्ची	कहानी	16
5.	अपूर्व अनुभव	संस्मरण	21
6.	रहीम के दोहे	दोहे	28
7.	कंचा	कहानी	33
8.	एक तिनका	कविता	40
9.	खान पान की बदलती तस्वीर	निबंध	46
10.	नील कंठ	रेखा चित्र	52
11.	वीर कुंवर सिंह	जीवनी	59

पाठ 1

रक्त और हमारा शरीर

प्रस्तुत निबंध 'रक्त और हमारा शरीर' यतीश अग्रवाल द्वारा लिखा गया है। इस पाठ के लेखक एक चिकित्सक हैं। इनके स्वास्थ्य सम्बन्धित लेख समाचार पत्रों में भी प्रकाशित होते रहते हैं। यह पाठ विज्ञान परक है। इसमें लेखक ने कहानी के माध्यम से बच्चों को रक्त के बारे में बताना चाहा है। जिसमें:-

दिव्या अनिल की छोटी बहन है। दिव्या शुरू से ही कमज़ोर रहती थी और कुछ दिनों से उसे थकावट महसूस हो रही थी। न तो उसे भूख लग रही थी और न ही काम में मन लग रहा था। डॉक्टर ने जाँच के बाद बोला कि "दिव्या के शरीर में रक्त की कमी लग रही है" और रक्त जाँच करवाने के लिए अनिल और दिव्या को एक कमरे में भेजा। वहाँ अनिल को अपनी जान पहचान की डॉक्टर दीदी मिली। डॉक्टर दीदी ने दिव्या की ऊँगली से रक्त की कुछ बूँदे एक शीशी में डालकर उसे स्लाइड पर रखा और अगले दिन रिपोर्ट लेने को कहा। अगले दिन दीदी ने सूक्ष्मदर्शी से जाँच करके अनिल को यह बताया कि दिव्या को "अनीमिया" है। यह सुनकर अनिल को जिज्ञासा हुई और उसने पूछा कि "अनीमिया क्या होता है?" दीदी ने अनिल को समझाया कि देखने में तो रक्त लाल द्रव के समान दिखता है किंतु सूक्ष्मदर्शी से देखने पर यह भानुमती के पिटारे से कम नहीं। मोटे तौर पर दीदी ने बताया कि रक्त के दो भाग होते है, एक भाग जो तरल है उसे "प्लाज़्मा" कहते है और दूसरा जिसमें कई तरह के कण होते है जैसे छोटे बड़े लाल सफ़ेद और कुछ जिनका कोई रंग नहीं जिन्हें बिंबाणु यानि 'प्लेटलैट' कहते हैं। सूक्ष्मदर्शी में जब अनिल ने लाल रक्त के कण देखे तो वह आश्चर्य चकित होते हुए बोला "रक्त की एक बूँद में इतने सारे कण, इन्हें देखकर तो ऐसा लग रहा है कि मानो ये छोटी छोटी बालूशाही रख दी गई हो"। दीदी ने भी अनिल की बात मानते हुए कहा कि "हाँ, ये गोल और दोनों तरफ से अवतल, यानि बीच में से दबे हुए होते हैं"। यही लाल कण साफ हवा से मिली ऑक्सीजन को शरीर के हर कोने में पहुँचाते हैं। इनका जीवनकाल चार महीने का होता है और उनके नष्ट होने पर नए कण इनकी जगह ले लेते है। दीदी बोली, इन कणों का निर्माण हड्डियों के बीच के भाग मज्जा में स्थित कारखानों में होता है और इन कणों के निर्माण के लिए प्रोटीन, लौहतत्व और विटामिन रूपी कच्चे माल की ज़रूरत होती है। यह कच्चामाल हमें पौष्टिक आहार जैसे हरी सब्ज़ी, फल, दूध, अंडा और गोश्त से मिलता है और अगर हम यह ग्रहण न करें तो लाल कणों की रक्त में कमी होगी तथा हमें "अनीमिया" होगा। इस पर अनिल ने पूछा कि "क्या मात्र संतुलित आहार लेने से अनीमिया से बचा जा सकता है?" तो इस पर दीदी बोली कि कुछ हद तक ही, क्योंकि पेट में हुए कीड़े से भी

अनीमिया हो सकता है जो दूषित जल और खाद्य पदार्थ खाने से हो जाते हैं। इनसे बचने के लिए हमें भोजन से पूर्व अच्छी तरह हाथ धोने चाहिए और साफ़ पानी पीना चाहिए। इसके अलावा अंडो से उत्पन्न कीड़े, लार्वे के रूप में हमारी त्वचा में घुस जाते हैं। इसी वजह से हमें शौच के लिए शौचालय का प्रयोग करना चाहिए। यह सुनकर अनिल गहरी सोच में डूब गया और उसने बाकि बचे सफेद कण और बिंबाणु (प्लेटलैट) का काम पूछा। इस पर दीदी ने बताया कि सफेद कण हमारे शरीर के वीर सिपाही होते हैं जो रोगों से हमारी रक्षा करते हैं तथा बिंबाणु हमें चोट लगने पर रक्त जमाव क्रिया में मदद करते हैं। यह सुनकर अनिल ने कहा कि "घाव गहरा होने पर तो रक्त बहता ही चला जाता है" दीदी ने जवाब दिया, ऐसी स्थिति में टाँके लगवाने पढ़ सकते है किंतु डॉक्टर के पास पहुँचने तक के समय में चोट के स्थान पर कसकर एक साफ कपड़ा बाँध देना चाहिए जिससे रक्त बहना कम हो जाता है। किंतु अगर अधिक रक्त बह जाए तो रक्त चढ़ाने की आवश्यकता भी पड़ सकती है। इसपर अनिल ने पूछा कि "क्या किसी भी व्यक्ति का रक्त काम आ सकता है?" दीदी ने मना करते हुए समझाया कि हर किसी का रक्त अलग होता है। हमारा रक्त-समूह चार तरह का होता है और जाँच के बाद ही उसी रक्त-समूह का रक्त चढ़ाया जाता है। इसी में और बताते हुए दीदी ने कहा कि समय पर रक्त समूह का कोई व्यक्ति न मिलने पर हर अस्पताल में "ब्लड बैंक" होता है। यहाँ सभी प्रकार के रक्त समूह होते है लेकिन रक्त-भंडार में रक्त बने रहने के लिए हमें समय-समय पर रक्तदान करना चाहिए। इसी के साथ यह भी स्पष्ट किया कि अठ्ठारह वर्ष से अधिक उम्र के स्वस्थ व्यक्ति से ही लगभग 300 मिलीलीटर तक ही रक्त लिया जाता है और क्योंकि हमारे शरीर में लगभग पाँच लीटर खून होता है तो इसीलिए हमें कोई कमज़ोरी नहीं होती तथा दिया गया रक्त कुछ ही दिनों में बन भी जाता है। यह सुनकर अनिल ने भी नियमित रूप से रक्तदान करने का निर्णय किया और दीदी ने अनिल की पीठ ठोकते हुए उसे शाबाशी दी।

1. रक्त बढ़ाने के लिए क्या खाएँ?
   सही पर गोला लगाएँ।

   अंडा आलू गुड़ चावल फल

   मिठाई दूध हरी सब्जी चने चावल

2. सही पर (✓) चिह्न और गलत पर (✗) चिह्न लगाएँ।

   क) कोई भी व्यक्ति रक्तदान कर सकता है। ☐

   ख) हर किसी का रक्त समूह एक सा नहीं होता। ☐

   ग) रक्तदान से कमज़ोरी नहीं आती। ☐

   घ) रक्तदान करने के कुछ ही दिनों बाद शरीर में रक्त वापस बन जाता है। ☐

3. वाक्यों में सही विराम चिह्न चुनकर लगाओ।

(क) तुम किसे ढूँढ़ रहे हो (?/।)

(ख) कितना सुंदर पक्षी है (?/!)

(ग) गिरीश बाहर खेल रहा है (।/!)

(घ) नेहा और मेघा अच्छी सहेलियाँ हैं (।/?)

(ङ.) काश मेरे पास भी मोबाइल होता (!/?)

4. उचित विराम-चिह्न लगाकर वाक्य दोबारा लिखिए :-

(क) माँ ने कहा खाना खाते समय ज़्यादा नहीं बोलो

....

(ख) हमें अपने भोजन में फल साग सब्ज़ी दाल दही और अनाज शामिल करना चाहिए

....

....

(ग) क्या तुम हमेशा इतना धीरे-धीरे चलते हो

....

(घ) हाय मैं तो लुट गया

....

वर्ग-पहेली

वर्ग पहेली में से नीचे दिए गए वाक्यांशों के लिए एक शब्द चुनकर लिखो -

शा	का	हा	री	क	ज
आ	स्ति	क	वि	नी	दै
ज्ञा	आ	धु	नि	क	नि
का	ग	अ	मू	ल्य	क
री	ग्रा	मी	ण	प	ड

क) जिसका मूल्य न आँका जा सके - ....

ख) जो मांस-मछली न खाता हो - ....

ग) जो ईश्वर में विश्वास रखता है - ....

घ) जो आज के समय का हो - ....

ड.) जो कविता लिखता है - ....

च) गाँव का रहने वाला - ....

छ) प्रतिदिन होने वाला - ....

ज) बड़ों की आज्ञा मानने वाला - ....

6. प्रत्येक पंक्ति में से भिन्न अर्थ वाला शब्द चुनकर लिखिए।

डाली	तना	टहनी	शाखा	....
तरु	पात	पत्ते	पत्र	....
फूल	कमल	सुमन	कुसुम	....
टहनी	तरु	वृक्ष	तरुवर	....
गगन	नभ	बादल	आसमान	....

7. शब्दों की सही वर्तनी के नीचे रेखा खींचिए -

(क)	ग्रहकार्य	गृहक्राय	गृहकार्य	ग्रहक्राय
(ख)	दवाईयाँ	दवाइयाँ	दवाईया	दवईयाँ
(ग)	क्रपया	क्रप्या	किरपया	कृपया
(घ)	प्रार्थना	प्राथार्ना	प्र्ाथना	परार्थना
(ड.)	स्वास्थ	स्वास्थ्य	स्वस्थ	सवास्थ्य
(च)	अतिथि	अतीथि	अतिथी	अतथि
(छ)	अजाद	आजाद	अज़ाद	आज़ाद
(ज)	चिड़िया	चिड़ीया	चिडिया	चीड़िया

पाठ 2

पापा खो गए

पाठ प्रवेश :-

हमारी कल्पनाओं का संसार बहुत ही विचित्र है। जब हम अपनी कल्पनाओं में खो जाते हैं, उस समय हमारे चारों ओर का वातावरण जीवंत हो उठता है। यानी जो भी निर्जीव चीज़ हमारे सामने होती है, कल्पना के संसार में वह सब बोलती है, चलती है, नाचती है, उठती है, बैठती है। इस कल्पना के संसार में कई बार कुर्सी हमसे बातें करने लगती हैं। रास्ते में चलते-चलते पेड़ हमारे साथ चलने लगता है।

कई बार कल्पना के बादलों में उड़ते-उड़ते आप ने भी ऐसे अनुभव किए होंगे। आप को पता है, मैं आप से कल्पना लोक का ज़िक्र क्यों कर रही हूँ? क्योंकि प्रस्तुत पाठ "पापा खो गए" भी पूरा का पूरा फैंटेसी है यानी कि काल्पनिक घटना। यह पाठ आप को एक अलग ही कल्पना लोक में ले जाएगा। जहाँ बिजली का खंभा, पेड़, लैटरबॉक्स, कौआ आपस में बातें करते हैं। यहाँ तक कि पोस्टर का चित्र भी नाचता है। इसके साथ इस पाठ में एक लड़की भी है जिसे अपने घर का रास्ता नहीं पता है। उस लड़की की समस्या का समाधान भी यह निर्जीव वस्तुएँ ढूँढ निकालती है।

अरे.......... अरे! रुको। आप तो अभी से उतावले हो उठे इनकी बातें सुनने के लिए। यह भी तो जान लीजिए कि इन कल्पनाओं की दुनिया में सैर कराने वाला पाठ लिखा किसने है? इस फंतासी दुनिया के लेखक विजय तेंदुलकर हैं। मूलत: यह नाटक मराठी भाषा में लिखा गया है। हिंदी भाषी बच्चे यानी कि आप भी इस रोचकता पैदा करने वाले नाटक का भरपूर आनन्द उठा सके, इसलिए इसे हिन्दी भाषा में अनुदित किया गया।

इस रचना के माध्यम से आप कल्पना लोक का तो आनन्द उठायेंगे ही, इसके साथ ही साथ आप लेखक की लेखनी से लिखी मराठी रचना को जब हिन्दी की दुनिया में अनुवाद के बाद रखा जाता है तो उस साहित्यिक धरोहर से भी परिचित होंगे।

1. यह मीना है, इसे इसके घर तक पहुँचाओ।

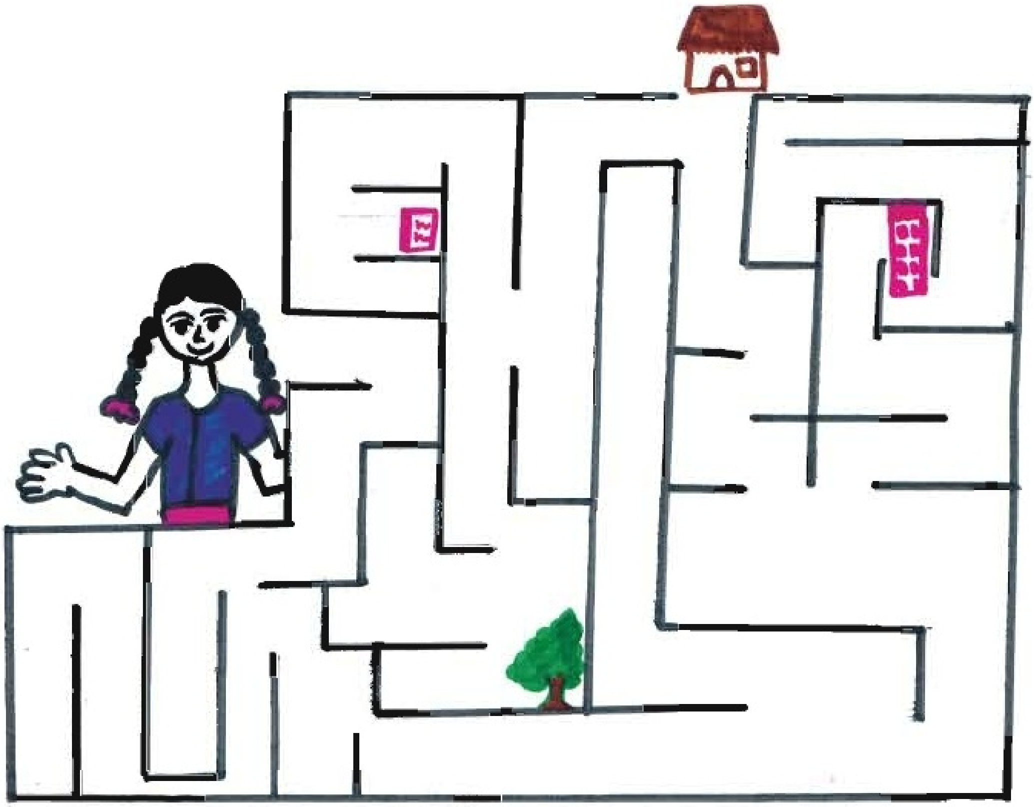

ऊपर वाले चित्र को देखो और उससे संबंधित जो प्रश्न आप के मन में उभर रहे हों उसे लिखोः-

प्र.1 ....

....

प्र.1 ....

2. **मेज़ और कुर्सी की बातें**

इस पाठ में कुछ निर्जीव चीज़ों ने आपस में संवाद स्थापित किए गए हैं आप भी कुछ संवाद लिखिए :-

मेज : ....

....

कुर्सी : ....

....

मेज : ....

....

कुर्सी : ....

....

मेज : ....

....

कुर्सी : ....

....

3. **नीचे एक गद्यांश है। इस गद्यांश में विराम चिह्न लगाइए।**

मुझ पर भी एक रात आसमान से गड़गड़ाती बिजली आकर पड़ी थी अरे बाप रे वो बिजली थी या आफ़त याद आते ही अब भी दिल धक-धक करने लगता है और बिजली जहाँ गिरी थी वहाँ खड्डा कितना गहरा पड़ गया था खंभे महाराज अब जब कभी बारिश होती है तो मुझे उस रात की याद हो आती है अंग थर-थर काँपने लगती है

4. शब्द जाल

इस मछुआरे के जाल से शब्द निकालो और उपसर्ग बनाओ।

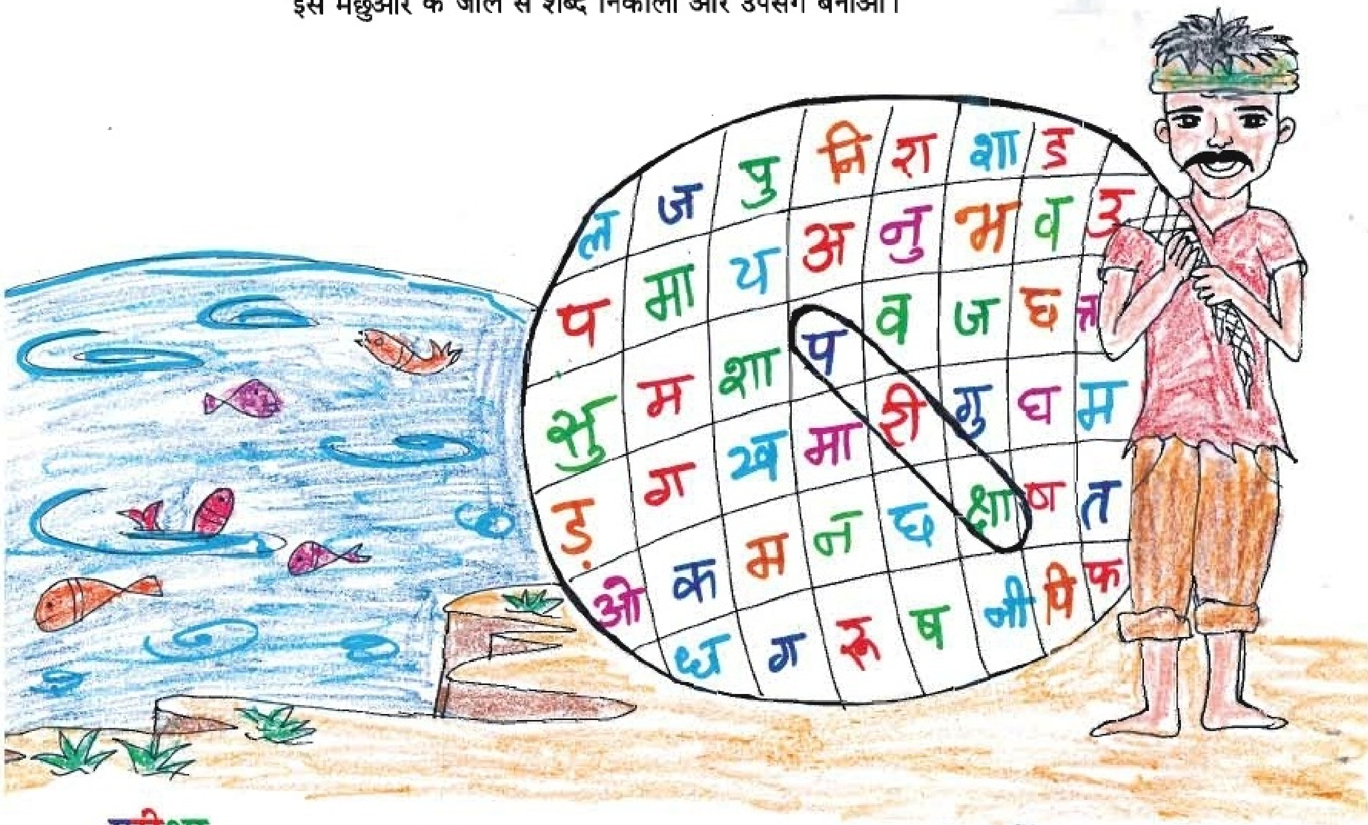

1. परीक्षा
2. __________
3. __________
4. __________
5. __________
6. __________

5. वर्ग पहेली में से समान अर्थ वाले शब्द चुनकर अलग-अलग लिखिए -

सू	र	ज	मे	दि
पा	नी	ल	घ	न
क	र	वि	न	क
म	ज	ल	ज	र
ल	घ	टा	फू	ल

_______________ _______________ _______________

_______________ _______________ _______________

_______________ _______________ _______________

_______________ _______________ _______________

पाठ 3

शाम - एक किसान ...

पाठ प्रवेश :-

बच्चों ! जब मैं आपके जितनी थी उस समय जब भी मैं अपने घर की छत पर जाती थी और आकाश में बादलों को गौर से देखती, उस समय मुझे बादलों में तरह-तरह की आकृतियाँ नज़र आती थी। जैसे, कभी तो मुझे उसमें खरगोश नज़र आता था, तो कभी भागते हुए हिरण। आप में से भी कुछ बच्चों के अनुभव ऐसे रहे होंगे। प्रस्तुत कविता 'शाम - एक किसान' में भी कवि ने इसी प्रकार की कल्पना की है। उन्होंने प्रकृति को मानवीय रूप में दर्शाया है। इस कविता में शाम के दृश्य को किसान के रूप में दिखाया गयाहै। यानी प्रकृति के सुंदर वातावरण को उन्होंने इंसान के रूप में दर्शाया है। मैं जानती हूँ आप भी सोच रहे होंगे कि भला शाम के प्राकृतिक दृश्य को एक किसान के रूप में कैसे दिखाया जा सकता है। आप भी इसे जानने के लिए उतावले हो रहे हैं। पर, साथियों यह भी तो जान लो कि इस कविता के कवि कौन हैं ? यह कविता सर्वेश्वरदयाल सक्सेना द्वारा लिखी गई है। यह मूलत: कवि एवं साहित्यकार थे। उन्होंने सामाजिक चेतना जगाने में अपना अनुकरणीय योगदान दिया। इन्होंने बाल साहित्य में भी अपना योगदान दिया। इनकी बाल कविताओं में बतूता का जूता, मंहगू की टाई और बाल नाटकों में भों-भों, खों-खों, इत्यादि की खूब चर्चा है। उन्हें कविता संग्रह 'खूटियों पर टंगे लोग' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

आओ साथियों ! हम भी प्रकृति के मनोहर दृश्य के मानवीयकरण रूप को देखें और आनन्द लें।

1. चित्र के आधार पर किन्ही छह शब्दों के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखो!

पर्वत	=	पहाड़	गिरि	शैल
....	=	....	....	....
....	=	....	....	....
....	=	....	....	....

2. वर्ग पहेली

जो शब्द सर्वनाम नहीं है, उसपर गलत (✖) का निशान लगाइए:-

हाँ	हम	मैं	आइए	उन्हें	किसी
स्वयं	तुम्हें	यदि	अपनी	कब	देखा
अगर	किसे	तुम	कभी	इसलिए	वही
उसका	आप	क्या	ये	उनके	हूँ
कोई	अभी	उसने	फिर	जो	कुछ

3.   नीचे दो चित्र बने हुए हैं उन्हें देखते हुए कविता को आगे पूरा करें :-

सुबह - सुबह सूरज चमका,

रात को तारे आते हैं

4. दिए गए शब्दों के बहुवचन रूप से रिक्त स्थान भरिए –

(क) बाग में जगह-जगह .... चल रहे थे। (फव्वारा)

(ख) सैनिकों ने .... निकाल ली। (तलवार)

(ग) महाराणा की .... फड़कने लगीं। (भुजा)

(घ) पतझड़ में पेड़ों की .... झड़ जाती है। (पत्ती)

(ड.) .... आपस में झगड़ने लगीं। (बिल्ली)

5. वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखो –

(क) जो दूसरों पर दया करते हैं।

....

(ख) जो पाठशाला में पढ़ाते हैं।

....

(ग) जो खेतों में अन्न उपजाते हैं।

....

(घ) जो बहुत परिश्रम करते हैं।

....

6. वर्ग पहेली में से संज्ञा और विशेषण शब्दों को चुनकर अलग-अलग लिखिए -

बे	ज	पा	क	भ	उ
व	ग	र	म	ला	दा
कू	ह	खी	हा	थी	स
फ़	स	ल	न	दी	पे
सुं	द	र	स्सी	चौ	ड़
वि	शा	ल	क	ड़ी	च

संज्ञा	विशेषण
______	______
______	______
______	______
______	______
______	______

पाठ
4

चिड़िया की बच्ची

पाठ प्रवेश :-

पक्षियों का संसार भी कितना विचित्र है। सुबह अपने घोंसले से दाने – पानी की तलाश में निकलते हैं, आसमान में उड़ते है, और शाम को वापस अपने घोंसले में चले जाते हैं। उन्हें अपना घर बहुत प्यारा लगता है। क्यों न लगे प्यारा, हम इंसानों को भी तो अपना घर बहुत पसंद है। पक्षियों की बात आई है तो मैं यह बताना चाहूँगी कि मुझे भी पक्षी बहुत पसंद हैं, खासतौर पर कबूतर। जब भी मैं कबूतर को दाना खाते हुए देखती हूँ मुझे वह बहुत सुंदर लगते हैं। उनका गर्दन घुमाकर इधर–उधर देखना तो बहुत अच्छा लगता है। इसी तरह बच्चों आप को भी पक्षी पसंद होंगे। आपको भी पक्षियों को देखना बहुत पसंद होगा। प्रस्तुत पाठ 'चिड़िया की बच्ची' एक छोटी सी, प्यारी सी चिड़िया की कहानी है। जिसे आकाश में घूमने, बगीचे में सैर करने, इस डाल से उस डाल पर थिरकने में खुशी मिलती है। चिड़िया के साथ–साथ इस कहानी में एक माधवदास भी है, जिनके घर में एक सुहावना बगीचा है। उस बगीचे में एक दिन लाल गर्दन वाली सुंदर चिड़िया आ जाती है। इतनी सुंदर चिड़िया देख, माधवदास का मन चिड़िया को अपने पास रखने का होता है। वह चिड़िया को अपने पास रहने के बहुत से प्रलोभन देता है। परन्तु चिड़िया को अपनी माँ और अपना घोंसला बहुत पसंद है।

बच्चों ! आप ही बताओ कि यदि आप को सारी सुविधाएँ देकर एक कमरे में सारा दिन बंद रहने को कहा जाए तो क्या आप मान लेंगे। मुझे लगता है आप का उत्तर होगा 'नहीं'। शायद मैं ठीक कह रही हूँ।

आप सोच रहे होंगे कि क्या माधवदास ने छल–कपट से चिड़िया को बंद तो नहीं कर लिया। परन्तु यह बात तो माधवदास के बगीचे में जा कर ही पता चलेगी।

अरे....... अरे........ रुको, यह भी तो जान लो कि यह कहानी लिखी किसने है। यह कहानी हिंदी के प्रसिद्ध कथाकार, उपन्यासकार जैनेंद्र कुमार ने लिखी है। यह हिंदी उपन्यासकार के इतिहास में मानव के मन का विश्लेषण करने की परम्परा का आरम्भ करने वालों के नाम से जाने जाते हैं।

चलो आओ बच्चों, अब हम इस मनोरंजक कहानी में चिड़िया के साथ माधवदास के बगीचे में चलते हैं ....

1. इस मटके में पुल्लिंग और स्त्रीलिंग वाले कुछ शब्द हैं। उनको ढूंढ़कर लिखो।

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
छात्र	छात्रा
________	________
________	________

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
________	________
________	________
________	________

2. 'अ' लगाकर शब्दों में परिवर्तन लाओ और विलोम शब्द पाओ :-

असंभव ____________ ____________

____________ ____________

____________ ____________

____________ ____________

3. नीचे लिखे शब्दों को बहुवचन में बदलो :-

बहन	बहनें
पुस्तक	
पंखा	
माला	
घोड़ा	

4. चित्र का नाम लिखकर कहानी पूरी कीजिए –

एक दिन एक .... के किनारे टहल रहा था।

उसने 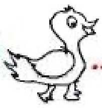 .... को .... में तैरते देखा।

उसने सोचा कि मैं भी तैरूँगा। 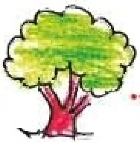 .... के किनारे

.... के पास एक 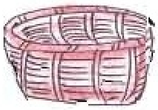 .... दिखाई दी।

.... 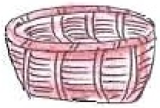 .... उठा लाया। उसने

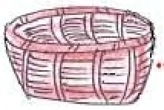 .... को उलटा करके ....

में डाला और उछल कर उसमें बैठ गया। 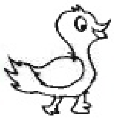 .... और

.... दोनों साथ-साथ तैरने लगे।

पाठ 5

अपूर्व अनुभव

पाठ प्रवेश :-

बच्चों कुछ समय पहले आपने समाचारों में यह खबर देखी या सुनी होगी कि रियो में हुए पैरालंपिक में पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला दीपा मलिक थी। आप को पता है कि यह दीपा मलिक पैरों से चलने में सक्षम नहीं है। जानते हैं, यह जिक्र यहाँ पर क्यों किया गया? आप समझ गए होंगे कि प्रस्तुत पाठ की प्रकृति भी इस बात से मेल खाती है। जिस प्रकार से दीपा मलिक ने पैरालंपिक की महिला गोला फेंक स्पर्धा में रजत पदक जीत कर अद्‌भुत साहस का परिचय दिया है, वैसे ही प्रस्तुत पाठ 'अपूर्व अनुभव' दो बच्चों के अदम्य साहस के अनुभवों पर आधारित है। आपकी ही उम्र की तोत्तो-चान इस कहानी की नायिका है। तोत्तो-चान के बचपन का यह वास्तविक अनुभव है। यह अनुभव बहुत साहस से भरा हुआ है। यासुकी-चान जो पोलियो ग्रस्त है उसे तोत्तो-चान एक ऐसा अनुभव प्राप्त करने में मदद करती हैं जो उसके लिए उमंग और उल्लास से भरा हुआ है। ऐसा अपूर्व अनुभव जो दुनिया की एक नयी झलक दिखाने वाला था शायद ही उसे कोई और दिखा पाता। आप तो तोत्तो-चान के अपूर्व अनुभव को जानने के लिए एक दम उतावले हो उठे। परन्तु साथियों यह भी जानो कि यह सुन्दर अनुभव लिखा किस ने है? यह संस्मरण (यानी अतीत की घटना पर आधारित) जापानी लेखक तेत्सुको कुरियानागी ने रचा है। मूलतः यह जापानी भाषा में लिखा गया है। आप सभी बच्चे भी इस साहस पैदा करने वाली रचना का आनन्द उठा सके, इसलिए इसका अनुवाद पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा ने किया है। लेखिका के अपने बचपन के अनुभवों पर आधारित पुस्तक 'तोत्ता-चान' है। इस पुस्तक के एक अंश को यहाँ प्रस्तुत किया गया है। जिस का नाम 'अपूर्व अनुभव' है।

मैं अब आप को और नहीं रोकती। चलिए अब आप तोत्तो-चान के साथ एक साहस भरे अपूर्व अनुभव के मज़े लीजिए।

1. उपर्युक्त देखते हुए जो भी विचार आपके मन में आ रहा है उसे लिखें।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखिए

1. यासुकी चान को क्या शारीरिक समस्या थी ?

   क) श्रवण बाधिता

   ख) दृष्टि बाधिता

   ग) पोलियो

   घ) कुछ भी नहीं

2. तोत्तो-चान यासुकी-चान को कैसे हँसाती है ?

   क) तरह-तरह के मुँह बनाकर

   ख) गाना गाकर

   ग) नाचकर

   घ) रोकर

3. दोनों के लिए पेड़ पर चढ़ना और चढ़ाना कैसा अनुभव था ?

   क) कड़वा

   ख) अपूर्व

   ग) भयानक

   घ) इनमें से कोई नहीं

4. तोत्तो-चान यासुकी-चान को कहाँ मिलती है ?

   क) घर

   ख) पुल

   ग) स्कूल

   घ) मंदिर

क्रियाकलाप - 'यदि हमारे पंख होते तो वृक्षों की ऊँची टहनियों पर हम जा बैठते' इस विषय पर बच्चों के अनुभव वक्तव्यों के माध्यम से कक्षा कक्ष में प्रस्तुत किए जाए और उनका लेखन भी किया जाए।

3. नीचे दी गई कहानी में कुछ सर्वनाम शब्द हैं। उनका पता लगाओ तथा नीचे खाली जगह में लिखो।

सावन का महीना था। आसमान में काले-काले बादल छाए थे। ठंडी हवा तेज-तेज चल रही थी। जमीन पर कुछ पत्ते बिखरे पड़े थे। मेरे भैया को झूला झुलाने का मन किया। वह घर से एक मोटी-सी रस्सी ले आए। उन्होंने मुझसे कहा, जा, तू एक लकड़ी का तख्ता ले आ। फिर भैया ने एक पेड़ देखा और कहा यह पेड़ अच्छा है तथा उस पर झूला बनाया। सबने झूला झूला। झूला झूल कर हम सब बहुत खुश हुए।

1. ....

2. ....

3. ....

4. ....

4. नीचे दिए गए डिब्बे में बहुत से शब्द हैं। उनमें से विशेषता बताने वाले शब्द नीचे दिए गए स्थानों में लिखो।

मोटा	मानसी	काला
वे	कहाँ	पेन
पीला	हम	सुन्दर
काजल	जहाँ	तुम
लम्बा	आगरा	सुषमा
अच्छा	कायर	तेज़
कठोर	बुरा	मनमोहक
मीठा	कुतुबमीनार	अलमारी

लम्बा

5. श्यामपट्ट पर लिखे शब्दों को अलग-अलग समूह की टोकरियों में लिखिए -

व्यक्तिवाचक संज्ञा

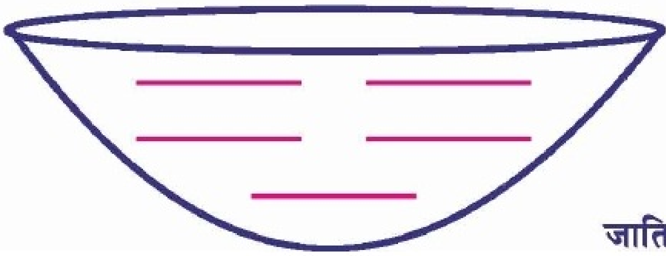

जातिवाचक संज्ञा

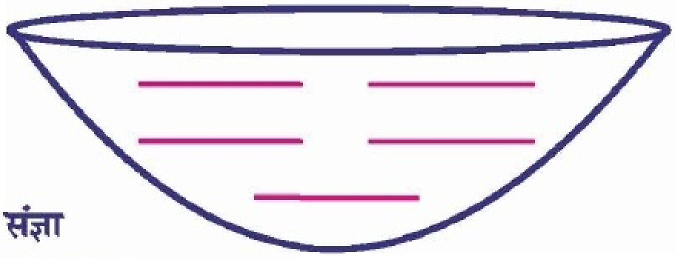

भाववाचक संज्ञा

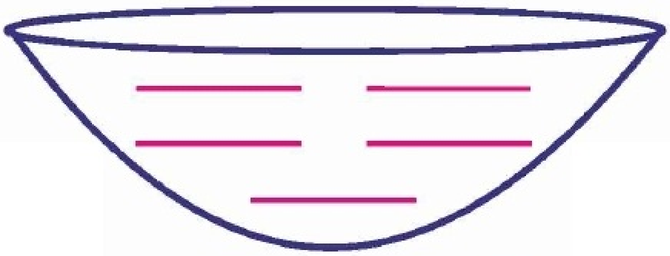

6. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्द एकवचन हैं या बहुवचन? लिखिए -

(क) ये फूल बड़े सुंदर हैं। ....

(ख) पिताजी खाना खा रहे हैं। ....

(ग) आसमान में तारे टिमटिमा रहे हैं। ....

(घ) यह आम बहुत मीठा है। ....

(ङ.) बगीचे में फलों के पेड़ .... लगे थे।

7. रेखांकित शब्दों के लिंग बदलकर वाक्य दोबारा लिखिए -

(क) सेवक हाथ जोड़कर खड़ा हो गया।

....

(ख) झोंपड़ी में एक बूढ़ा रहता था।

....

(ग) पुजारी ने सबको प्रसाद बाँटा

....

(घ) शादी में वधू बहुत सुंदर लग रही थी।

....

पाठ 6

रहीम के दोहे

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय।

टूटे पे फिर न जुरे, जुरे गाँठ परी जाय।।

यह दोहा आप में से बहुत से बच्चों ने सुना होगा, गुनगुनाया होगा, गाया होगा। यह दोहा कवि रहीम का है। आप यह भी समझ गए होंगे, कि यह दोहा यहाँ प्रस्तुत करने का क्या कारण है। इसका कारण यह है कि आज हम रहीम के दोहों को गुनगुनाएगें।

बहुत से बच्चों ने तो पहले से ही रहीम के दोहे सुर और ताल के साथ सुने भी होंगे। कुछ गायक-गायिकारों ने अपनी मधुर वाणी में रहीम के दोहों की रिकॉर्डिंग भी करवाई है। यह दोहे ऑडियो सी.डी. में सुनने पर बहुत अच्छे लगते हैं। रहीम के दोहों को गाने से पहले चलो यह जान लें कि कवि रहीम का हिंदी साहित्य में स्थान कहाँ है?

हिंदी साहित्य चार भागों में बँटा हुआ है। जिसमें पहला आदि काल, दूसरा भक्ति काल, तीसरा रीतिकाल और चौथा आधुनिक काल है। भक्ति काल को स्वर्ण युग भी कहा जाता है। इसी स्वर्ग युग में रहीम का महत्वपूर्ण स्थान है। उनके काव्य में नीति, भक्ति, प्रेम और श्रृंगार आदि के दोहे मिलते हैं। रहीम जाति से मुसलमान होते हुए भी कृष्ण के भक्त थे। उन्होंने हिंदी, संस्कृत, अरबी, फारसी का बहुत अध्ययन किया। वह राजदरबार में अनेक पदों पर कार्य करते हुए भी साहित्य की रचना करते रहे। उनका व्यक्तित्व बहुत ही प्रभावशाली था। रहीम ने अपने काव्य में 'रहीम' की बजाए 'रहिमन' का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत पाठ में रहीम के दोहों का सार यह है:- पहले दोहे में वह यह बताते हैं कि जब मनुष्य के पास सुख और सम्पति होती है उस समय अनेक लोग सगे-संबंधी बन जाते हैं। पर सच्चे मित्र तो वह है जो विपत्ति में भी साथ रहे। दूसरे दोहे में रहीम ने मछली का जल से प्रेम बताया है। मछली जल से इतना प्रेम करती है कि यदि वह पानी से अलग हो जाए तो वह तड़प-तड़प कर मर जाती है।

तीसरे दोहे में यह बताया गया है कि जिस प्रकार पेड़ अपना फल नहीं खाते और सरोवर अपना पानी नहीं पीते वैसे ही अच्छे व्यक्ति दूसरों के कार्य के लिए संपत्ति को जोड़ते हैं।

चौथे दोहे में उन्होंने यह कहा कि जिस प्रकार क्वार के बादल गरजते हैं, उसी तरह अमीर व्यक्ति जब गरीब हो जाते हैं तब वह अपनी बातों का बार-बार बखान करते हैं।

पाँचवे दोहे में उन्होंने यह बताया है कि जिस प्रकार धरती सर्दी-गर्मी और बरसात सह लेती है, उसी तरह मनुष्य का शरीर, शरीर तब कहलाता है जब विपत्ति को सह जाता है।

पाठ से :-

प्रश्न 1. 'पेड़ फल नहीं खाते, तालाब अपना पानी नहीं पीते' किस दोहे में कहा गया है। पाठ में से ढूँढ़कर लिखिए।

प्रश्न 2. पाठ में आए दोहों में आपको सबसे अच्छा दोहा कौन सा लगा और क्यों ?

प्रश्न 3. निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित हिंदी रूप लिखिए :-

परे	**पड़े**
विपति	....
मछरी	....
सीत	....
बादर	....
सरवर	....
पाछिली	....

प्रश्न 4. शब्द पहेली :-

संज्ञा शब्द छाँटिए-

प	ध	र	ती	म	स
ख	त	रा	ही	भ	पु
च	सं	ल	नी	म	रु
फ	त	रु	व	र	ष
ग	थ	क	म	ल	त्र
ध	व	छ	ड	छ	श
ठ	ल	ट	ज	ढ़	ली

प्रश्न 5. वृक्ष, सरोवर व सज्जन व्यक्ति परोपकार कैसे करते हैं? क्या आपने कभी परोपकार किया है? यदि किया है तो कैसे?

प्रश्न 6. रहीम कहते हैं कि मनुष्य को सुख-दुख का सामना समान रूप से करना चाहिए। क्या यह सही है? यदि हाँ तो पक्ष में तर्क दो।

प्रश्न 7. स्तम्भ **एक** का स्तम्भ **दो** के साथ सही मिलान कीजिए –

स्तम्भ – I	स्तम्भ – II
रहीम के दोहे बताते हैं	जल से
मछली प्रेम नहीं त्यागती है	नीति के विषय में
सज्जन सम्पत्ति संचय करते हैं	धरती को
कवि ने सहनशील बताया है	परोपकार के लिए

प्रश्न 8. पाठ को पढ़कर खाली जगहों में पाठ से ही शब्दों को छाँट कर लिखें –

क) बिपति कसौटी जे कसे, तेई .... मीत।

ख) तरुवर .... नहीं खात है।

ग) धनी पुरूष .... भए, करें .... बात।

घ) धरती की सी .... है।

ड.) रहिमन मछली .... को, तऊ न छौड़ति .... ।

प्रश्न 9. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

	शब्द	अर्थ	वाक्य प्रयोग
1.	कसौटी		
2.	मोह		
3.	निर्धन		
4.	धरती		
5.	देह		

क्रियाकलाप – कक्षा कक्ष में विद्यार्थियों के समूह बनाकर रहीम के दोहों का पठन/वाचन/गायन कराया जाए तथा रहीम, कबीर, रसखान आदि महान कवियों के दोहों के आधार पर अन्त्याक्षरी का आयोजन करवाया जाए।

प्रश्न 10. वाक्य में रेखांकित शब्दों के स्थान पर सर्वनाम शब्द लिखते हुए वाक्य दोबारा लिखिए –

(क) अजय अच्छा लड़का है। अजय मेरा दोस्त है।

....

(ख) नेहा सुनो। नेहा को अब घर जाना चाहिए।

....

(ग) निहित खाना खा रहा है। निहित को चावल अच्छे लगते हैं।

....

(घ) बच्चे खेल रहे हैं। बच्चों को बुला लाओ।

....

(ड) कुसुम बहुत देर से खेल रही है। कुसुम को अब घर जाना चाहिए।

....

(च) समीरा कह रही है, "समीरा कल आऊँगी।"

....

पाठ 7

कंचा

पाठ प्रवेश :-

सभी बच्चे को खेलना बहुत पसंद होता है। खेलना वास्तव में एक आनंददायक और मनोरंजक अनुभव है।

कंचे, गिल्ली-डंडा, गेंदतड़ी (पिट्ठू), क्रिकेट जैसे खेल गली-मोहल्लों में आज भी नज़र आ जाते हैं। हर बच्चे के खेलने के अपने अलग-अलग खेल होते हैं। ऐसे ही प्रस्तुत पाठ कंचा में भी एक बच्चा है जिसे खेलने से बहुत लगाव है। अप्पू इस कहानी का नायक है, पूरी-की पूरी कहानी अप्पू के इर्द-गिर्द घूमती है। अप्पू को कंचे खेलना बहुत पसंद है। अप्पू के जैसे, आप को भी कोई-ना-कोई खेल ज़रूर पसंद होगा। आप भी अपने खेल के चक्कर में कभी-न-कभी अपनी ही दुनिया में खोये हुए होंगे। अप्पू कक्षा में भी, अपने खेल की काल्पनिक दुनिया में खोया हुआ है। क्या आप भी कक्षा में रहते हुए, अपनी काल्पनिक दुनिया में गायब रहे हैं? मुझे लगता है अप्पू के साथ-साथ आप भी उस के खेल की दुनिया का आनन्द उठाना चाहते हैं। आप तो अप्पू की कक्षा में जाने के लिए एक दम तैयार हो गए। साथियों! यह भी जान लो कि यह कहानी लिखी किसने हैं। यह बच्चों पर आधारित कहानी टी.पद्मनाभन ने रची है। हिन्दी भाषी बच्चे यानी कि आप भी इस रोचक कहानी का आन्नद उठा सके इसलिए इसका हिंदी भाषा में अनुवाद किया गया। इस रचना के माध्यम से आप इन बातों का मजा ले रहे हैं।

पहला कि मलयालम भाषा की रचना जब हिन्दी में पंख फैलाती है तो कैसी दिखती है।

दूसरा कल्पना की दुनिया के मजे लेंगे। अब चलिए अप्पू की कक्षा और उसके घर की सैर कर आइए।

1. चित्र में दिए गए खेलों के नाम लिखो

1.

2.

3. ______________

4. ______________

2. बच्चों, आपको जो खेल पसंद है नीचे उसका चित्र बनाए तथा उस खेल का नाम लिखते हुए दो पंक्तियाँ उस खेल के बारे में लिखो:-

खेल का चित्र बनाओ

खेल का नाम लिखो: ....

पंक्तियाँ:-

....

....

3. इन चित्रों की दो–दो विशेषताएँ बताइए :–

हरा पेड़   बड़ा पेड़

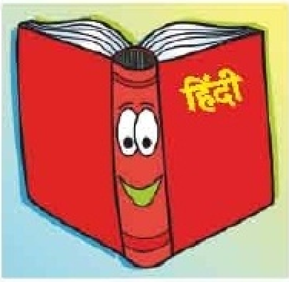

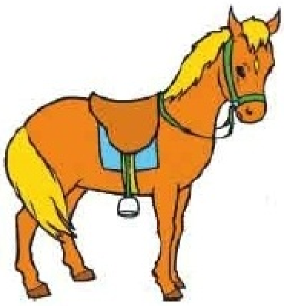

4. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्द के विलोम लिखकर रिक्त स्थान भरिए –

क) सूर्य पूर्व दिशा में .... होता है और पश्चिम में अस्त।

ख) मेरे लिए तो यह जीवन .... का प्रश्न है।

ग) उतना ही व्यय करो जितनी .... हो।

घ) साक्षी के सामने तो तुम उसकी प्रशंसा कर ही थीं, उसके जाते ही .... करने लगीं।

5. नीचे लिखे शब्दों के समानार्थी शब्द चुनकर लिखिए –

खेतिहर – ....

बदरंग – ....

धनहर – ....

वर्षा – ....

लगातार – ....

घास – ....

दूब
धान फीका
अविराम किसान
पावस

प्रश्न 6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखिए-

1. कंचा कहानी के लेखक कौन हैं,

   क) यशपाल

   ख) टी. पद्मनाभन

   ग) जैनेन्द्र

   घ) भगवतीचरण वर्मा

2. लेखक ने कहानी में किसका वर्णन किया है-

   क) प्यार का

   ख) इलाज का

   ग) युद्ध का

   घ) बालमनोविज्ञान का

3. अप्पू ने डरकर काँपते हुए क्या उत्तर दिया -

   क) रेलगाड़ी

   ख) कंचा

   ग) जार

   घ) हवाई जहाज

4. अप्पू कक्षा में कहाँ खोया था ?

   क) कहानी में

   ख) जार में

   ग) कल्पना में

   घ) फिल्म में

क्रियाकलाप - बचपन में कंचों को इकट्ठ करके हम धनवान बनते थे वहाँ हमारे अंदर संग्रह की प्रवृति बनती थी हमें इसके लिए घर और विद्यालय दोनों जगह मना किया जाता था। क्या यह सही था ? लिखित विचारों के साथ स्पष्ट करें।

एक तिनका ...

पाठ प्रवेश :-

बच्चों ! क्या कभी किसी वजह से आपका सीना गर्व से चौड़ा हुआ है। आपमें से बहुत से बच्चे होंगे जिन्होंने यह सुख से भरा एहसास महसूस किया होगा। ऐसी बहुत सी बातें है जिन पर गर्व महसूस करना अच्छी बात है गर्व या घमंड खुशी का वह एहसास होता है जो कोई कार्य करने या कुछ मिलने पर होता है। परन्तु अपनी काबिलियत और धन का घमंड करना अच्छा नहीं है।

जानते हो, मैं आप के सामने इस बात की चर्चा क्यों कर रही हूँ क्योंकि प्रस्तुत कविता 'एक तिनका' की प्रकृति भी ऐसी ही है।

साथियों अब यह भी जान लो कि घमंड करने वाला व्यक्ति कितना ही ताकतवर क्यों न हो, परन्तु एक छोटा सा आँख में गया हुआ तिनका उसके घमंड को तोड़ देता है।

यह कविता हिंदी के महान साहित्यकार अयोध्या सिंह उपाध्याय (हरि औध) द्वारा रचना की है। 'हरि ओध' जी को खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्यकार माना जाता है।

बच्चों ! आप भी जानने के लिए आतुर होंगे कि उस व्यक्ति की आँख में तिनका कैसे चला गया चलिए अब आप इस कविता का आनन्द लीजिए।

आकर मुझे ज़रूर बताना कि नायक की आँख में तिनका कैसे पड़ गया।

1. **नीचे जो चित्र हैं उनमें जो काम किया जा रहा है, उसे लिखो:-**

रोना

प्रश्न 2. पाठ को पढ़कर खाली जगहों में पाठ से ही शब्दों को छाँटकर लिखो–

क) एक तिनका .... में मेरी पड़ा।

ख) मैं .... से भरा ऐंठा हुआ।

ग) .... होकर आँख भी दुखने लगी।

घ) जब किसी .... से निकल तिनका गया।

ङ.) .... तू किसलिए इतना रहा।

प्रश्न 3. स्तम्भ **एक** का स्तम्भ **दो** से सही मिलान कीजिए–

स्तम्भ - I	स्तम्भ - II
घमण्ड	तरीका
ऐंठ	धिक्कारना
झिझक	अकड़
ताना	अहंकार
ढब	हिचकिचाना

प्रश्न 4. प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखिए –

1. तिनका किसकी आँख में गिरा ?

   क) बच्चा

   ख) अध्यापक

   ग) कवि

   घ) डाक्टर

2. एक दिन कवि कहाँ खड़ा था ?

   क) पार्क में

   ख) छत की मुंडेर पर

   ग) बालकनी

   घ) सड़क पर

3. लोगों को देखकर कवि की क्या प्रतिक्रिया हुई ?

क) करुणा

ख) दया

ग) अकड़

घ) शर्म

4. लोगों ने कवि की मदद क्या निकालने में की ?

क) आँख से तिनका

ख) कान से मैल

ग) पैर का काँटा

घ) हाथ का काँटा

प्रश्न 5. निम्नलिखित शब्दों को पढ़ें और उनमें से संज्ञा व सर्वनाम शब्द छाँटकर तालिका पूरी करें।

हिमालय, तुम, सोना, आप, रमेश, वह, लाल, सुन्दर, मटर, गुलाब, शारदा, गाय, उन्हें, सूर्य, हम, हमारे

संज्ञा	सर्वनाम

क्रियाकलाप - तिनके से जुड़े इस प्रसंग को पढ़कर आपको कुछ कहावतें याद आ रही होंगी। उनकी एक सूची बनाएँ और उन पर छोटी-छोटी टोलियों में चर्चा करें।

6. चित्रों को देखते हुए विलोम शब्द बनाओ

चित्र		विलोम शब्द
	=	रात
	=	________
	=	________
	=	________

7. नीचे लिखे शब्दों की जगह और कौन-सा शब्द इस्तेमाल हो सकता है? खाली जगह में लिखो।

बुद्धिमान	समझदार
अभिमान	________
संसार	________
मूर्ख	________
विश्वास	________
आनंद	________

पाठ 9

खान-पान की बदलती तस्वीर ....

पाठ प्रवेश :-

बच्चों ! खाने पीने की तरह-तरह की चीज़ों को देखकर मेरे मुँह में तो पानी आ जाता है। आये भी क्यों न ? वह देखने में तो अच्छी लगती हैं। और उनकी सुगंध तो और भी अच्छी लगती हैं। मैं खान-पान की चर्चा इसीलिए यहाँ कर रही हूँ कि प्रस्तुत पाठ 'खान-पान की बदलती तस्वीर' में भी विभिन्न प्रकार के खानों की चर्चा की गई है।

यह पाठ आप को खाने की दुनिया की सैर तो करवाएगा ही और साथ ही साथ यह भी बताएगा कि पहले के खाने में क्या-क्या था और अब धीरे-धीरे इसमें कितना बदलाव आने लगा है।

बच्चों आप भी स्थानीय व्यंजनों का अन्य प्रदेशों के व्यंजनों के साथ मिलने व उनके फायदों व नुकसान के बारे में जानना चाहोगे ?

फास्ट-फूड और पैकेटबंद खाद्य पदार्थों ने कैसे अपने पैर पसारने शुरू कर दिये हैं।

बच्चों ! आपको भी बर्गर, नूडल्स जैसे फास्ट-फूड पसंद होगा।

आप भी खाने की दुनिया में जाने के लिए उतावले हो रहे हैं।

आओ पहले जान लो कि यह रचना प्रयाग शुक्ला द्वारा रची गयी है जो हिंदी के कवि अनुवादक एवं कहानीकार हैं। इन्हें साहित्य अकादमी का अनुवाद पुरस्कार, शरद जोशी सम्मान एवं द्विजदेव सम्मान से सम्मानित किया गया है। चलो अब जाने की खानपान ने कैसे अपनी तस्वीर बदल ली है।

1. प्रश्न – खान-पान की चीज़ों का उनके नाम के साथ मिलान कीजिए:-

- समोसे
- लस्सी-परांठा
- दाल-रोटी
- इडली-साँभर
- छोले-चावल
- बर्गर

2. नीचे कुछ व्यंजनों के चित्र दिए गए हैं। कौन से व्यंजन स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हैं, उनके नाम नीचे दिए गए स्थान में लिखें।

मोमोज़

छोले - पूरी

दाल - चावल

चाऊमीन

बर्गर

सब्जी रोटी

फ्रेंच फ्राईज़

3. दिए गए शब्दों को उनके विलोम शब्दों के साथ मिलान कीजिए:-

अंधकार	विद्वान
धरती	प्रकाश
मूर्ख	आकाश
प्रवेश	पश्चिम
पूर्व	निकास

4. निम्नलिखित खाद्य पदार्थों का इनके सही स्थानों से मिलान कीजिए–

खाद्य पदार्थ	स्थान
ढोकला	राजस्थान
दाल चूरमा	गुजरात
इडली डोसा	महाराष्ट्र
वड़ा पाव	दक्षिणी भारत

5. इस पाठ को पढ़कर खाली जगहों में पाठ से ही शब्दों को छाँट कर लिखें–

क) फास्ट फूड का चलन भी .... में खूब बढ़ा है।

ख) खानपान की इस बदलती संस्कृति से सबसे अधिक प्रभावित .... हुई है।

ग) आगरा के .... में अब वह बात कहाँ रही।

घ) उत्तर भारत में उपलब्ध .... की भी दुर्गति हो रही है।

ड.) कई स्थानीय व्यंजनों को हमने तथाकथित .... के चलते छोड़ दिया।

6. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखिए–

1. 'खानपान की बदलती तस्वीर' के लेखक कौन हैं ?

   क) प्रयाग शुक्ल

   ख) विद्यानिवास मिश्र

   ग) हजारी प्रसाद द्विवेदी

   घ) डॉ. हरदयाल

2. पाठ के अनुसार उत्तर भारत की कौन सी संस्कृति सब जगह फैल चुकी है ?

   क) ढाबा

   ख) ग्रीन हाउस

   ग) माल

   घ) रेस्टोरेंट

3. दक्षिण भारत का खाद्य पदार्थ कौन सा है ?

क) डोसा

ख) नूडल्स

ग) पेड़े

घ) दालबाटी

4. स्थानीय व्यंजनों की स्थिति अब कैसी हो गई है ?

क) बेस्वाद

ख) लुप्त

ग) खराब

घ) सुप्त

5. किस क्षेत्र के जीवन में भागम भाग है ?

क) ग्रामीण

ख) शहरी

ग) दोनों

घ) विदेशी

प्रश्न 8. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए।

	शब्द	वाक्य प्रयोग
1.	खानपान	....
2.	मिश्रित	....
3.	बदलाव	....
4.	उपलब्ध	....
5.	आज़ादी	....
6.	तबादला	....

क्रियाकलाप – ''अरे ओ दाल रोटी ! पिज्ज़ा के सामने तेरी क्या मजाल'' पंक्ति को अपने विचारों के अनुसार आगे बढ़ाएँ।

नीलकंठ

पाठ प्रवेश :-

वर्षा ऋतु में मोर को नाचते हुए देखना अपने आप में मनोहर दृश्य होता है। मोर को नाचते हुए तो मैंने नहीं देखा परन्तु उसे अपनी आँखों से ज़रूर देखा है। मेरा विश्वास है कि आप में से भी बहुत से बच्चों ने मोर को देखा होगा। मोर का ज़िक्र यहाँ होने से आप समझ ही गए होंगे कि प्रस्तुत पाठ मोर से सम्बन्धित है।

हाँ वास्तव में प्रस्तुत पाठ 'नीलकंठ' के नायक का नाम ही नीलकंठ है जो एक सुन्दर मोर है। इस पाठ को लिखने वाली छायावाद की महान लेखिका महादेवी वर्मा हैं। महादेवी वर्मा का यह रेखाचित्र (यानी किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना या भाव का कम से कम शब्दों में भावपूर्ण एवं संजीव अंकन करना है, जिससे शब्दों के माध्यम से मस्तिष्क में एक चित्र उभरता है) है।

लेखिका का पशु-पक्षियों से बहुत लगाव है। इसी कारण वह मोर के दो बच्चों, एक मोर व एक मोरनी को अपने घर ले आती हैं। लेखिका के घर में पहले से ही कुछ पशु-पक्षी हैं। परन्तु लेखिका का मोर से अपना एक अलग ही जुड़ाव है। रचना पढ़ते हुए विभिन्न दृश्यों का बोध आपको होगा।

इस रचना के माध्यम से आप तीन बातों का मज़ा ले रहे हैं, पहला यह है कि एक-एक शब्द को पढ़ते हुए आपको यह अहसास होगा कि उस शब्द का एक चित्र आपके मस्तिष्क में उभरता जाएगा, जैसे एक फिल्म आपके सामने प्रस्तुत हो रही हो। दूसरा यह कि लेखिका के जीवन की वास्तविक घटना से परिचित हो पाएँगे। तीसरा यह कि आप विभिन्न पक्षियों की विशेषताओं के बारे में जानेंगे।

अब आओ हम लेखिका के घर चलते हैं जहाँ विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षी आप को देखने को मिलेंगे, जिनके स्वभाव से आप परिचित होंगे ....

1. लिंग बदलो –

1. – मोरनी

मोर

2. 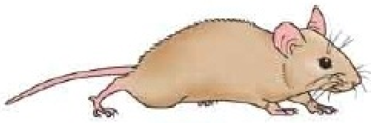 – ______

चूहा

3. 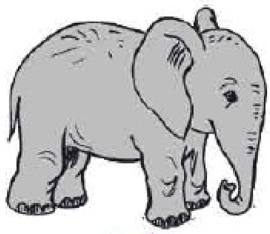 – ______

हाथी

4. – ______

बालक

2. निम्नलिखित शब्दों में 'ता' प्रत्यय लगाकर भाव वाचक संज्ञाएँ बनाइए:-

- सुगम + ता = सुगमता
- दरिद्र + ता = ...
- उदार + ता = ...
- भावुक + ता = ...
- मानव + ता = ...
- कृपण + ता = ...
- मित्र + ता = ...
- निर्मल + ता = ...

3. लिखो कि ऐसे रंग किन-किन चीज़ों के होते हैं :-

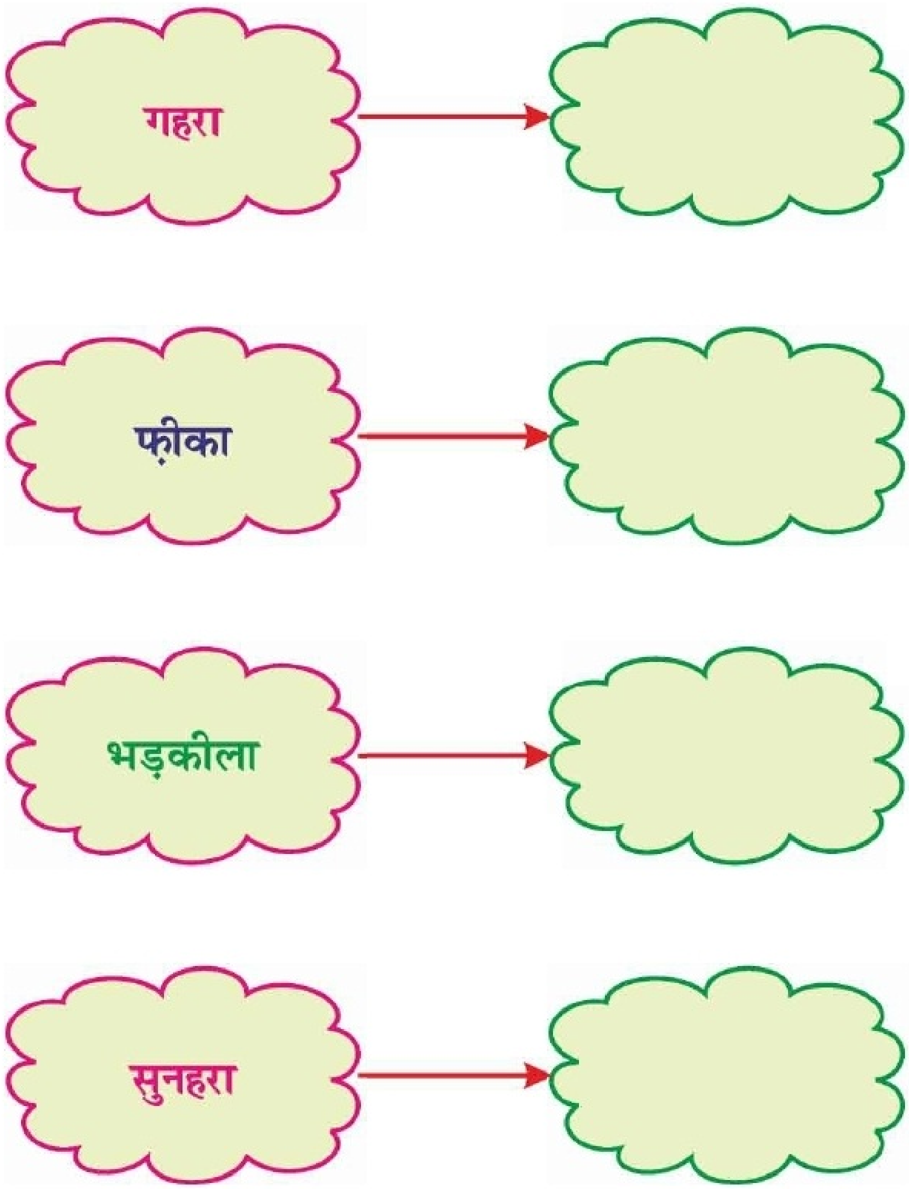

4. पाठ को पढ़कर खाली जगहों में पाठ से ही शब्दों को छाँटकर लिखो–

क) धीरे–धीरे दोनों .... के बच्चे बढ़ने लगे।

ख) मोर के सिर की कलगी और सघन .... हो गई।

ग) नीलाभ ग्रीवा के कारण मोर का नाम रखा गया .... ।

घ) राधा ने .... देने की आवश्यकता नहीं समझी।

ङ.) नीलकण्ठ और राधा की सबसे प्रिय ऋतु तो .... ही थी।

च) राधा अब प्रतीक्षा में ही .... थी।

5. निम्नलिखित शब्दों को विग्रह करके लिखिए–

उदाहरण – बहुरूप – बहु + रूप

	शब्द	विग्रह
क)	फलरूप	....
ख)	ज्ञानरूप	....
ग)	रंगरूप	....
घ)	गंधरूप	....
ङ.)	कुरूप	....

6. प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखिए –

1. 'नीलकण्ठ' पाठ की विद्या है ....

   क) कहानी

   ख) निबन्ध

   ग) रेखाचित्र

   घ) संस्मरण

2. 'नीकण्ठ' पाठ की लेखिका हैं ....

   क) मीराबाई

   ख) अमृता प्रीतम

   ग) महादेवी वर्मा

   घ) मन्नू भण्डारी

3. मोरनी का नाम था ....

क) राधा

ख) श्यामा

ग) गीता

घ) सीता

4. नीलकण्ठ को लेखिका ने प्रवाहित किया ....

क) गंगा

ख) यमुना

ग) सतलुज

घ) कावेरी

7. निम्नलिखित नामों का सही पशु या पक्षी से मिलान करो –

नाम	पशु/पक्षी
नीलकण्ठ	बिल्ली
राधा	मोर
चित्रा	मोरनी
लक्का	पक्षी
कुब्जा	कबूतर

क्रियाकलाप – क्या हमारी तरह पशुपक्षियों के भी घर होते हैं? इस विषय पर जानकारी एकत्र कर उनकी सूची बनाओ।

8. इन शब्दों के अर्थ पढ़ो और दोनों अर्थ स्पष्ट करने वाले वाक्य बनाओ।

- चाल =
  1. चलने का ढंग

     ....
  2. कपट का छल

     ....

- उत्तर =
  1. जवाब

     ....
  2. एक दिशा

     ....

- भाव =
  1. वस्तु का दाम

     ....
  2. भावना

     ....

पाठ
11

वीर कुँवर सिंह

पाठप्रवेशः-

बच्चों आप 1857 के विद्रोह के बारे में कुछ-कुछ बातें तो जानते ही होंगे। 1857 के विद्रोह का जब भी ज़िक्र होता है तब हमें उस विद्रोह के मुख्य नेताओं नाना साहेब, ताँत्या टोपे, बखत खान, रानी लक्ष्मी बाई आदि के नाम हमारी ज़ुबान पर आ जाते हैं। उन्हीं में से एक वीर नेता वीर कुँवर सिंह भी थे। प्रस्तुत पाठ में वीर कुँवर सिंह के जीवन को दर्शाया गया है, उनकी वीरता के किस्सों के साथ-साथ उनके व्यक्तित्व की उदारता, संवेदनशीलता और सामाजिक कार्यों को भी प्रस्तुत किया गया है। यह रचना एक इतिहास परख एवं जानकारी परख रचना है। वीर कुँवर सिंह की जीवनी यानी उनके जीवन की घटनाओं को बहुत ही रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। साथियों! आप को इस रचना से इतिहास की जानकारी तो मिलेगी साथ ही आप को वीर कुँवर सिंह के जीवन से परिचित होने का आनन्ददायक अवसर भी मिलेगा।

आप भी यह जानने के लिए आतुर हो रहे होंगे कि किस तरह से वीर कुँवर सिंह ने ब्रिटिश शासन की भारत से नींव हिलाने का काम किया? कहाँ-कहाँ उन्हें सफलता हासिल हुई? किस प्रकार वह अंग्रेज़ी सेना को परास्त करते थे? बच्चों इन प्रश्नों के उत्तर तो हमें उनकी बहादुरी के किस्सों से ही मिल सकते हैं। तो चलते हैं इस इतिहास परख रचना के पृष्ठों के अन्दर जहाँ हमें इन प्रश्नों के उत्तरों के साथ-साथ उनके साहसी, उदार और स्वाभिमानी प्रसंग से भी परिचित होने का मौका मिलेगा।

1. 'वीर कुँवर सिंह' पाठ से दस सर्वनाम चुनकर नीचे लिखो।

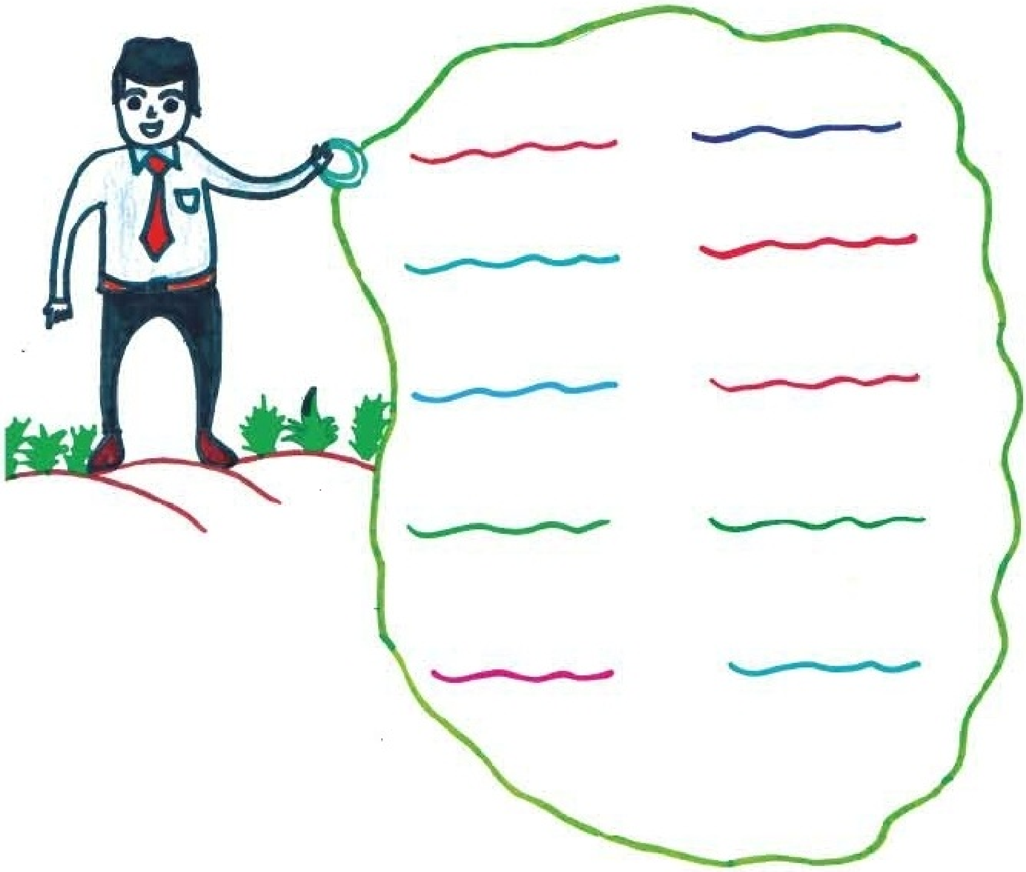

2. नीचे कुछ फूल दिए गए हैं। उन फूलों के अन्दर कुछ प्रत्यय हैं। इन प्रत्ययों से शब्द बनाए और फूलों की पत्तियों में उन शब्दों को लिखोः-

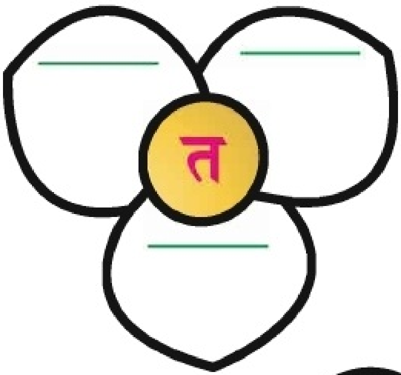

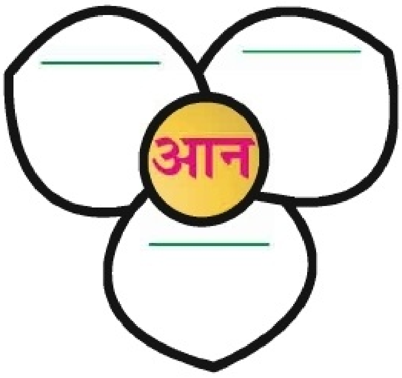

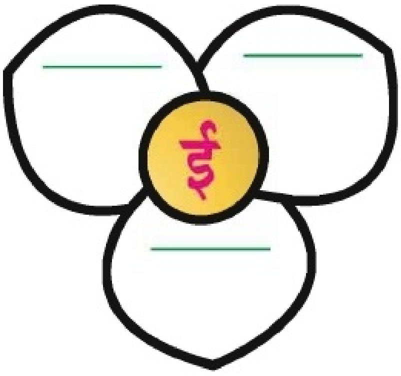

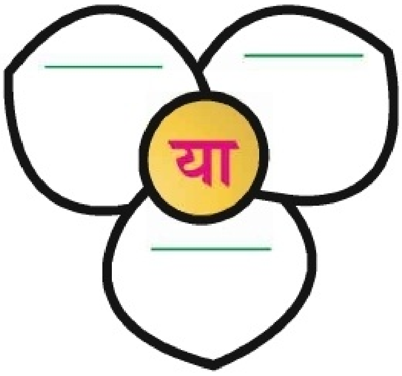

3. नीचे लिखे शब्दों के विलोम बनाइए :-

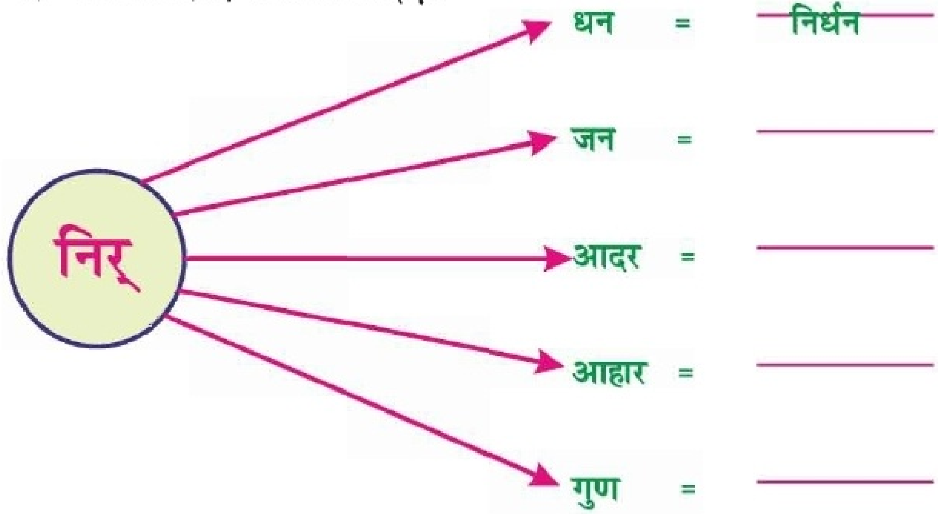

4. डिब्बों में 'उप' उपसर्ग जोड़कर नए शब्द बनाइए :-

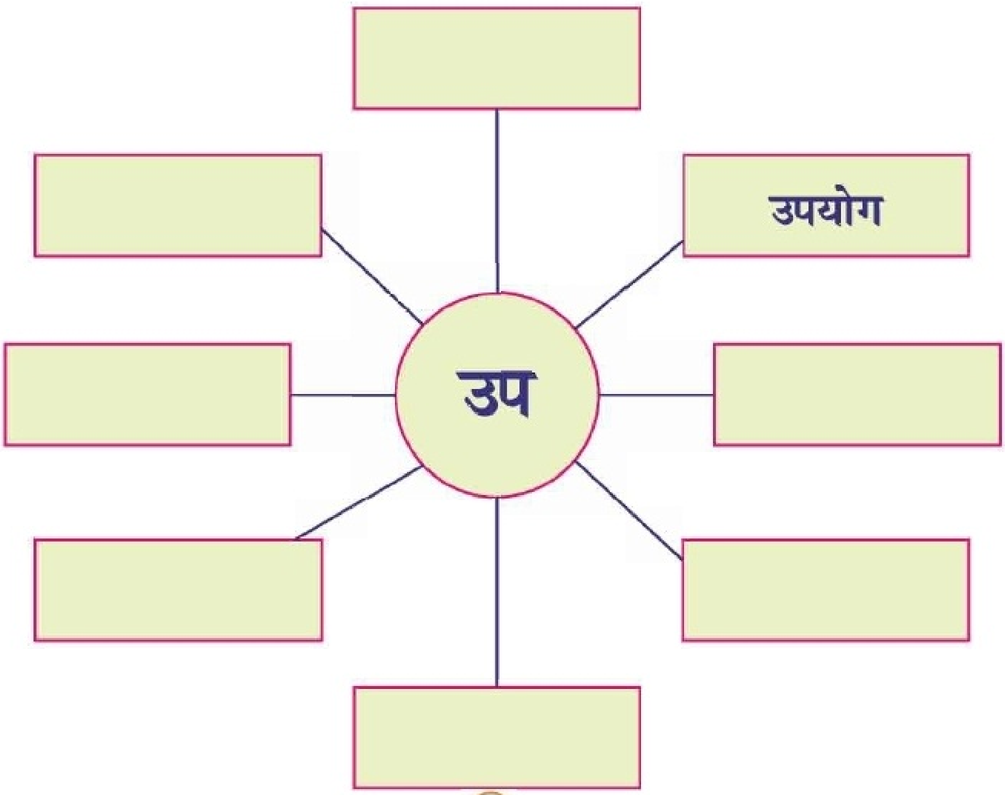

Document Outline

- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_01
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_02
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_03
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_04
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_05
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_06
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_07
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_08
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_09
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_10
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_11
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_12
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_13
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_14
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_15
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_16
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_17
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_18
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_19
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_20
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_21
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_22
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_23
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_24
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_25
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_26
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_27
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_28
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_29
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_30
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_31
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_32
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_33
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_34
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_35
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_36
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_37
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_38
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_39
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_40
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_41
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_42
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_43
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_44
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_45
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_46
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_47
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_48
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_49
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_50
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_51
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_52
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_53
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_54
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_55
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_56
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_57
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_58
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_59
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_60
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_61
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_62
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_63
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_64

- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_65
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_66
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_67
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_68
- 9_pragati_II_Hindi_Class_7.pdf_page_69